जबलपुर-कटंगा कॉलोनी। ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ पर आयोजित 'मानवीय मूल्य एवं विश्व शांति' कार्यक्रम में मंचासीन हैं केन्द्रीय मंत्री अनन्त गीते, म.प्र. शिवसेना अध्यक्ष ठाड़ेश्वर महावर, ब्र.कु.विमला तथा अन्य।

विक्रमगंज-विहार। केन्द्रीय राज्य मंत्री उपेन्द्र कुशवाहा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुनीता।

नवी मुंबई-पनवेल। आदर्श ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट के चेयरमैन धनराज विसपुते को उनके जन्म दिन के अवसर पर बधाई देने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु.तारा। साथ हैं ब्र.कु. डॉ. शुभदा नील।

कादमा-हरि.। ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ पर आयोजित कार्यक्रम के उद्घाटन पश्चात् समूह चित्र में प्रो.धनसिंह चौधरी, सरपंच दलवीर सिंह गांधी, पूर्व प्राचार्या सरला चौधरी, ब्र.कु.उर्मिला, ब्र.कु.वसुधा, समाज सेवी श्याम लाल गर्ग, मा. दरिया सिंह तथा अन्य।

मुंदरा-कच्छ(गुज.)। 'संगीतमय स्वास्थ्य शिविर' में शिवध्वज लहराते हुए योगाचार्य ब्र.कु.संजीव, ब्र.कु.धरती, ब्र.कु.सुशीला, ब्र.कु.वर्षा, ब्र.कु.हेतल, ब्र.कु. निशा, शुभम शिपिंग के सी.ई.ओ. सुरेश भाई ठक्कर, शक्ति भाई तथा वसंत भाई।

सोनगढ़-गुज.। पीस मैसेन्जर बस के आगमन पर स्वागत करते हुए पी.एस.आई. यशवंत भाई तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

जैसी प्रकृति अंदर, वैसी प्रकृति बाहर

- गतांक से आगे...

मनुष्य की प्रकृति कैसे निर्मित होती है? जिस प्रकार का व्यक्ति भोजन करता है। सात्विक भोजन करता है तो उससे सात्विक प्रकृति का देह तैयार होता है। राजसिक भोजन करते हैं तो उससे राजसिक प्रकृति का देह तैयार होता है और जब तामसिक भोजन खाते हैं तो तामसिक प्रकृति का देह तैयार होता है। अगर हम तामसिक भोजन करने के बाद इच्छा करें कि हमें सात्विक गुण का बच्चा मिले, ये कभी हो सकता है! जैसा आपने खाया है, जैसी प्रकृति आपने अंदर डाली है, उसी प्रकृति से तो वो शरीर तैयार होने वाला है।

फिर वो बच्चा आपको दु:ख देता है। अब तामसिक प्रवृत्ति वाला बच्चा दु:ख ही देगा ना। इसलिए जिस प्रकार का शरीर हमें तैयार करना होता है, वह हमारे ऊपर है। तब कहा कि प्रकृति से उत्पन्न होने वाले सतो, रजो और तमो, ये तीन गुण अविनाशी देही को देह से बांधते हैं। सतो गुण किसको कहते हैं? निर्मल माना पवित्र। बुद्धि को प्रकाश प्रदान करने वाला। निर्विकारी होने के कारण वह व्यक्ति को सुख और ज्ञान के सम्बन्ध में ले आता है, बांधता है। वो ज्ञानी बन जाता है।

रजो गुण वाले व्यक्ति को कामना और आसक्ति से उत्पन्न जानो। वह आत्मा को कर्म के बंधन में बांधता है और तमो गुण अज्ञान से उत्पन्न होता है जो आत्मा को आलस्य, निद्रा और प्रमाद में बांधता है। इस प्रकार से जैसी प्रकृति वैसे ही आत्मा के अंदर लक्षण भी आते हैं। इसलिए आज दुनिया के अंदर भी, और आगे के गीता के अध्यायों में हम देखेंगे कि सात्विक भोजन एवं राजसिक भोजन किसको कहा जाता है और तामसिक भोजन किसको। इसलिए तो कहा जाता है कि जैसा अन्न वैसा मन। जिस प्रकार के भोजन को हम

-ब्र.कु.ऊषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

स्वीकार करते हैं, वैसी हमारे शरीर की प्रकृति तैयार होती है। तमोगुण की बुद्धि से अज्ञानता, आलस्य, अलबेलापन, प्रमाद और मोह की अभिव्यक्ति होती है। जिस कारण तमोगुणी मनुष्य अधोगति को प्राप्त होते हैं और पुन: जन्म भी पशु समान होता है। पशु योनि में नहीं जाता है। मनुष्य योनि में रहकर के ही पशु समान उसका जीवन बन जाता है अर्थात् नर्क समान उसका जीवन बन जाता है। किस प्रकार की विचारधारा, किस प्रकार का भोजन आवश्यक है?

जब रजोगुण में वृद्धि होती है तो अत्यधिक आसक्ति, स्वार्थ युक्त कर्म का प्रारंभ होता है। अशांति एवं इच्छाओं का उदय होता है। रजोगुणी कर्म के फल से दु:ख की अनुभूति होती है एवं रजोगुण की वृद्धि काल में मृत्यु को प्राप्त करने वाला, कर्म बंधन होने के कारण पुन: जन्म में भी, जीवन बंध का अनुभव करता है। तमो गुण वाला पशु समान जीवन, नर्क समान जीवन और रजोगुण वाला, जीवन बंधन में महसूस करता है। जैसे हर क्षण कोई न कोई प्रकार का बंधन उसको बांधे हुए है ऐसा अनुभव करता है।

- क्रमश:

ख्यालों के आईने में...

"

जीवन 'बाँसुरी' की तरह है,
जिसमें बाधाओं रुपी कितने भी
छेद क्यों न हों...,
लेकिन जिसको उसे
बजाना आ गया,
उसे जीवन जीना आ गया..।

"

अज्ञानी व्यक्ति गलती छिपाकर
बड़ा बनना चाहता है,
और
ज्ञानी व्यक्ति गलती मिटाकर
बड़ा बनना चाहता है।

"

'प्रेम और पसंद' दोनों में
क्या अंतर है?
इसका सबसे सुन्दर जवाब गौतम
बुद्ध ने दिया है : अगर तुम एक फूल
को पसंद करते हो तो तुम उसे तोड़कर
रखना चाहोगे..,
लेकिन अगर उस फूल से प्रेम करते हो
तो तोड़ने के बजाय तुम रोज़ उसमें पानी
डालोगे ताकि फूल मुरझाने न पाए..।
जिसने भी इस रहस्य को समझ लिया
समझो उसने पूरी ज़िंदगी को ही समझ
लिया।

"

गुरबानी कहती है.......
'सो मन अपना सो मन तैसा'
अर्थात् ::
अपने मन की जो स्थिति
होती है, हमें वैसी ही दुनिया
नज़र आती है।
एक इंसान जिसका मन
अवगुणों से भरा हुआ हो,
तो उसे सबमें अवगुण ही
नज़र आते हैं।
मगर गुणों से भरे इंसान को
सबमें गुण ही गुण
नज़र आते हैं।

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें
आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

'Peace of Mind' channel

TATA Sky 1065 airtel digital TV 678 FASTWAY GTPL DEN
videocon d2h 497 RELIANCE Digital TV 640 hathway UCN DigiCable SITI

Free to Air
ABS FREE DTH
KU Band with MPEG (DVB-S/S2) Receiver
LNB Freq. - 10600/10600
Tans Freq. - 11911
Polarization - Horizontal
Symbol - 44000
22k - On
Satellite - ABS-2; 75° E

Contact
Brahma Kumaris, 2nd Flr Anand Bhavan, Shantivan, Sirohi, Abu Rd, Raj-307510
+91 9414151111
+91 8104777111
info@pmtv.in
www.pmtv.in

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें...

कार्यालय- ओमशान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510, सदस्यता के लिए
सम्पर्क - M - 9414006096, 9414182088,
Email- omshantimedia@bkivv.org,
Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये, आजीवन 4500 रुपये ।
विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम से मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।